मौसम के परिवर्तन पे हिंदू घोषणा ।

६ साल बीत चूके है । मौसाम के परिवर्तन की हिंदू घोषणा को । पुरे जगत के धरम मे मेलबोन के ओस्ट्यल्या मे गोद लिया है ।

इस ग्रह के लालची लोगो ने इस धरम का शोषण किया है और उन्होनें ये चेतावनी दिऐ है और किसी उग्र बदलाव से कुदरत का रिशता बदला नही जा सकता, यह कोई रासता नही है । यह जीने कि वजह है। और जिने के लिए हम कुदरत को बर्बाद कर सकते है, बिना खुद को बर्बाद किए ।

दुर्भाग्य से जग से यह नरयत्मक कारवाई कि है । तबसे वैाश्वक तापमान समुद्र स्थल का बद चुका है, और समुद्र का अम्लीकरण बीगड चूका है। बर्फ आर्कटिक और अंटार्कटिका शहरो में बहुत तेजी से पिघल रहा है। लेकिन हम फिर भी अब तक व्यापक अम्लिकरण संधि पे मौसम के बदलाब पर है इस नियत पे आने वाली बड़ी मुसीबत है मौसम का बदलाव यह एक कडां लक्षण है मौसम के बदलाव का लकिन हमारा ग्रह भूमी देवी हमें यह सब देती है ।

विश्व हिंदु सर्मिती के सदस्यो ने २०१५ मे पेरिस के मोसमिक सम्मलेन में यह बात छेडी की मौसम के बदलाव को और कुदरत कि बर्बादी को रोकना चाहिए । उसे दोनो स्थर पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्थर पर कारवाई कि जानी चाहिए । यह कारवाई वैज्ञानिककली विश्वसनीय और इतिहासकरिका होना चाहिए । जादातर खनिज पदार्थ के रसायन से प्रदूषण होता है। प्रौघोगिकी इन सब से दूर रकाना चाहिए ।

परिवर्तन का इस्तमाल करक १००% सुध्द उर्जा कि जरुरत जल्द से जल्द दर युग को है। यह सब करने से मनुष्य कि स्थायी प्रगती हो सकती है और करोडो लोगो को बिजली और शुध्द खाना पकाने कि सुविधाये मिल सकती है। और अच्छी जिंदगी जीसकते है बिना गरीबी ।

हम सिर्फ सरकार पर मिलबित नही रहे सकते। हमारे मौसमिय बदलाव के लिए । हम में से हरे एक को अपना योगदान देना चाहिए । इस कुदरत कि रक्षा के लिए हमें अपने अदंर और बहार का व्याहार बदलना चाहिए । जैसे महात्मा गांधी ने कहा है कि हम अगर अपने आप को बदल सकते है, तो हम पुरी दुनिया को बदल सकते है । जैसे इन्सान अपने स्वाभव और व्याव्हार में बदलाव लाता है तो दुनिया का नजरिया उसकी तरफ देखने का बदल जाता है । हमें सिर्फ दुसरो को देखना चाहिए

महाभारतामा (१०९.१०) कहा है, कि धर्म सबकी भलाई के लिए बनाया गाया है जहाँ पे सरे मनुष्या की भालई होती है वहाँ धर्म होता है। आजकल हिंदूओ को अपना धर्म को बदाने के बारे में बताते है । हमें सिर्फ यह कारवाई अपने तक ही नही बलकी पुरे विश्व के जिव -जंतु तक पोहचनी चाहिए । इस ग्रह पेहम सब मनुष्य का यह फर्ज है बिक हमें हमारी धारमिर्क कार्या कि सारी बाते और फर्ज निभाने चाहिए । १९८६ में घोषणा कि गई उसमें डॉ. करन सिंह लिखते है, कि हिंदुत्व यह विश्वास रखता है कि प्रभत्व की भक्ती इस धरती पर अलग-अलग जीवो के प्रमाण में है । मनुष्य अपनी पुरी जिंदगी इस में व्यतीत नहीं करते बल्की इसके थोडे-थोडे हिसो में भाग लेते है । जोरस पुरे ब्रमण्डं की भक्ती से सम्बन्धित है । श्रीमद भगवद गीता में (२.२.४१) वायु अग्नि, जल दिशाएँ झॉड प्रभू के अंग हिस्से है । इसे ध्यान में रखते हुए, भगवान के भक्त इन सब कि यह पता हैं, इस लिए वह अहिंसा को छोटा करके इसको अपने कार्यां से सामन्यता दिनचार्य में नुकसान नही पहुंचाते ।

हिंदू होने कि वजह से हमें इस जिदंगी का, मनुष्य का, पेधो का और जानवारो का आधार करते है । हमारी नदिया हमारी देविया है, और हमारे पर्वत हमारे भगवान है । पुरा परिद्शाय हमें भक्ती के समान दिखता है । ग्रह और तार, यह सारे बवतिक वस्तुएँ हे लेकिन यह सारे आकशिय है । उनके बीच की जो जगह है वह पुरी भक्ति से भरी हुई है । जब हम यह संगतन करते है तो हम अपने सहयोजियोका विचार न करते है । हम आगे निकल जाते है । हम भक्ति के मोंकट बन जाते है। और जो काम हम करते है उनमें पुरे जगत की रक्षा करने का काम होता है । हमें हमारा धर्म प्रकिती के बदलाव में रखना चाहिए । जहाँ पे हम सचे जिंदगी आदर और सम्मान से विताये । वसुंदरा कुटुमबकम (धरती का पुरा परिवार है ।) सर्वभूतहिता सबके बारे में अच्छा सोचना और हम यह जनते है कि हमें करम के बारे में सब पता है । जो जन्म, मरन और पुर्नजन्म से संब्धित है ।

प्रकृति का बदलाव हमें दुख, तकलिफ और हिंसा तब तक देता है जब तक हम अपनी शक्ती जमीन, खेत, जानवर, कुदरत यह सब कैसे इस्तमाल करे । हमें सिर्फ दुख तकलीफ और हिंसा ही मिलेगी । अगर हमने इस्तमाल करने का तरिका बदला नहीं तो । व्यक्तिक हम इसे बदल सकते है अगर हम यहाई आदत बनाई कि हम कुदरत से उतना ही हिसा ले जिसकी हमें जरुरत हो । कुदरत कि रक्षा करने के लिए हमें प्रत्येक जन को एक-एक झाड लगाना चाहिए । यह करने से हम कुदरत को समान रख सकते है और अपनी जिंदगीयो को खुशाल बना सकते हैं ।

५ हजार साल पहले, हिंदुत्व की खोज में, संनातन धर्म को वेदास ने खोजा गाया था । यह पुरे जगत में भक्ति की सुखात थी । अलग-अलग प्रकार के मनुष्य अपने अलग-अलग रिशतो के सात अपने सनातन धर्म में पाये जाते है । हिंदुत्व इस प्रकृति के को रिगवेदा के उक अहयाय में स्थुति कहा है । एकम सदम, बिपरा, बबुधा, वंधती । स्थय एक है, लेकिन चतुर इन्सान उसे बहुत सरो नामो से

जानते है । योगा के बहुत सारेमार्ग है । लेकिन इस कि प्राप्ती के लिए हमें कर्म, भक्ति , ज्ञान और राज योग करना चाहिए । जो अभी इस समय पुरे देश मे फेला है । और हमें इसका बड़ी सुंदरता से स्वागत करते है । परिवर्तन से हमें भटकना नही चाहिए और हमें अपना विश्वास नही खोना चाहिए संस्कृति में तीन शब्द से जो हिंदुत्व का वर्णवि करते है, वह है इसामस्य, इधम, सर्वम । यह पुरा विश्व भगवान कि तरह है ।

आजकल हर एक इन्सान को यह सवाल पुछाना चहिए कि हम कैसे भक्ति करे और भूमी देवी का रक्षा करे ।

इस अर्थपूर्ण सहयोग कारवाई निस्वार्थ काम और भक्ति करने से । हमारे अदंर और वहार का बदलाव प्रकृति के लिए जरुरी है । यह सब करने से हम आपने हिंदूत्व का और अपने धर्म की शाकशक देते है ।